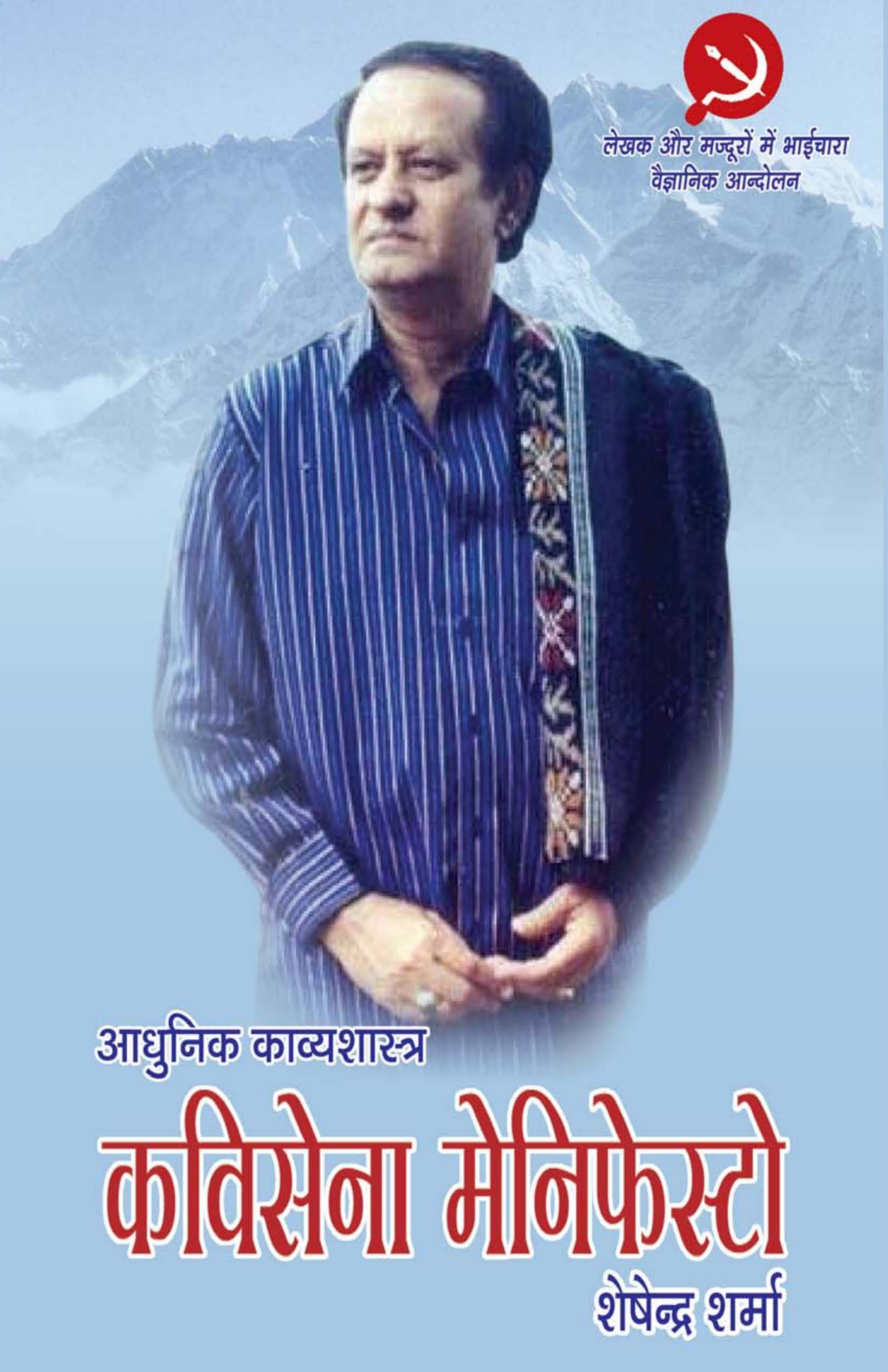

लेखक और मज्दूरों में भाईचारा
वैज्ञानिक आन्दोलन

आधुनिक काव्यशास्त्र

कविसेना मेनिफेस्टो

शेषेन्द्र शर्मा

शेषेन्द्र की माताश्री अम्मायम्मा (कुर्सी पर बैठी) और (बाई ओर से) उनकी छोटी पुत्री देवसेना; बहू तथा शेषेन्द्र की पत्नि श्रीमती जानकी; उनका पुत्र शेषेन्द्र, उनकी पति सुब्रहमण्यम, उनके छोटे पुत्र राज शेखरम्, उनकी बडी पुत्री अनसूया । (फोटो तोटपल्लि गूडूरु गाँव, नेल्लूरू जिला - 524311, आन्ध्र प्रदेश में 1949)

Donated by: **Y. Venkateswara Rao,** Chairman, Rythu Nestham Foundation, Hyderabad & Guntur
Editor - Rythu Nestham Monthly Magazines

आधुनिक काव्यशास्त्र

कविसेना मेनिफेस्टो

Seshandra : Visionary Poet of the Millenium
http:// seshendrasharma.weebly.com

***

...जीवन के आरम्भ में वह अपनी माटी और मनुष्य से जुड़े हुए रहे हैं।
उसकी तीव्र ग्रन्ध आज भी स्मृति में है जो कि उनकी कविता
और उनके चिन्तन में मुखर होती रहती है।
वैसे इतना मैं जानता हूँ कि शेषेन्द्र का कवि और
विचारक आज के माटीय और मानवीय उत्स से
वैचारिक तथा रचनात्मक स्तर के
साथ-साथ क्रियात्मक स्तर पर भी जुड़ते रहे हैं
और इसका बाह्य प्रमाण उनका 'कवि-सेना' वाला आन्दोलन है।
यह काव्यात्मक आन्दोलन इस अर्थ में चकित कर देने वाला है
कि सारे सामाजिक वैषम्य, वर्गीय-चेतना, आर्थिक-शोषण की
विरूपता-वाली राजनीति को रेखांकित करती हुए भी
शेषेन्द्र उसे काव्यात्मक आन्दोलन बनाये रख सके।
मैं नहीं जानता कि काव्य का ऐसा आन्दोलनात्मक पक्ष
किसी अन्य भारतीय भाषा में है या नहीं,
पर हिन्दी में तो नहीं ही है और इसे हिन्दी में आना चाहिए।

- नरेश मेहता
कवि उपन्यासकार, समालोचक
ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता

गुन्टूरु शेषेन्द्र शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट
हैदराबाद, भारत

आधुनिक काव्य शास्त्र

कवि सेना मेनिफेस्टो

कवि : शेषेन्द्र शर्मा

अनुवाद :
आचार्य वै. वेंकट रमण राव
विश्रांत आचार्य, अध्यक्ष हिंदी विभाग,
डीन मानविकी संकाय
हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण : 1998

द्वितीय संशोधित संस्करण : 20 अक्तूबर 2019

' सात्यकि शेषेन्द्र शर्मा के पुत्र

मूल्य : रु. 400/-
ebooks@kinige.com

संपादकीय सहायता :
डॉ. बी. सत्यनारायण
हिंदी अकादमी

सुश्री क्षत्रीया हनीता सिंह
टेस्ट इंजीनीर,
सेंटर फर गुड गवरनेंस

डॉ. जी. नीरजा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद

आवरण :
वेंकट अत्तलूरि, सात्यकि

प्रकाशक :
गुन्टूरु शेषेन्द्र शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट
हैदराबाद, भारत

मुद्राकार :
साई लिखिता प्रिंटर्स
खैरताबाद, हैदराबाद

विषय सूची

परिचय :
दार्शनिक और विद्वान कवि एवं काव्य शास्त्रज्ञ 4

प्रकाशकीय कविता की कसौटी
कविसेना ने दी गद्य कविता को गरिमा और गौरव
– डॉ. अद्दंकी श्रीनिवास 5

कविता है एक मंदिर 7
काव्यशास्त्र है कविता की लक्ष्मण रेखा
– डॉ. बी. वाणी

अनुवादक के मन की बात *– यद्दनपूडि वेंकटरमण राव* 9
लेखक की ओर से दो शब्द *– शेषेन्द्र शर्मा* 11

शेषेन्द्र जी की हिन्दी में अनूदित रचनाएँ 14

कविसेना मेनिफेस्टो :
वास्तव में कविता लिखनी चाहिए 15

पूरब और पश्चिम में काव्याशास्त्र 21

लक्ष्य और नियम 35

मेधावी का नेतृत्व 38

आज की यह सामाजिक चेतना क्या है ? 41

आज की साहित्य समालोचना की असली समस्या :
उसके वाक्य में चुम्बक शक्तिकविता क्या शब्द–शिल्प है ? 45

कविता क्या शब्द–शिल्प है ? 52

कविता एक आत्म कला है 64

काव्यकला में शब्द की भूमिका 84

कविता में प्राचीन भाषा और वर्तमान भाषा 103

वह कविता समझ में नहीं आती–वह रोमांटिक कविता है
वह प्रेम कविता है – वह आत्माश्रयी कविता है 112

कवि के लिए पाण्डित्य आबश्यक है क्या ? 141

कविता में प्रतिबद्धता (कमिटमेण्ट) 176

परिशिष्ट 305

दार्शनिक और विद्वान कवि एवं काव्य शास्त्रज्ञ

शेषेन्द्र शर्मा

20 अक्तूबर 1927 – 30 मई 2007

Seshendra: Visionary Poet of the Millennium
http://www.seshendrasharma.weebly.com

मातापिता	:	अम्मायम्मा, जी. सुब्रह्मण्यम
भाईबहन	:	अनसूया, देवसेना, राजशेखरम
धर्मपत्नि	:	श्रीमती जानकी शर्मा
संतान	:	वसुंधरा, रेवती (पुत्रियाँ) वनमाली सात्यकि (पुत्र)
बी.ए	:	आन्ध्रा क्रिस्टियन कालेज गुंटूर आं.प्र.
बी.एल.	:	मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास
नौकरी	:	डिप्यूटी मुनिसिपल कमीशनर (37 वर्ष) मुनिसिपल अड्मिनिस्ट्रेशन विभाग, आं.प्र.

***

शेषेन्द्र नामसे ख्यात शेषेन्द्र शर्मा आधुनिक भारतीय कविता क्षेत्रमें एक अनूठे शिखर हैं। आपका साहित्य कविता और काव्य शास्त्र का सर्वश्रेष्ठ संगम है। विविधता और गहराई में आपका दृष्टिकोण और आपका साहित्य भारतीय साहित्य जगत में आजतक अपरिचित है। कविता से काव्यशास्त्र तक, मंत्र शास्त्र से मार्क्सवाद तक आपकी रचनाएँ एक अनोखी प्रतिभा के साक्षी हैं । संस्कृत, तेलुगु और अंग्रेजी भाषाओं में आपकी गहन विद्वत्ता ने आपको बीसवीं सदी के तुलनात्मक साहित्य में शिखर समान साहित्यकार के रूपमें प्रतिष्ठित किया है। टी.एस.इलियट, आर्चबाल्ड मेक्लीश और शेषेन्द्र विश्व साहित्य और काव्य शास्त्र के त्रिमूर्ति हैं । अपनी चुनी हुई साहित्य विधा के प्रति आपकी निष्ठा और लेखन में विषय की गहराइयों तक पहुंचने की लगन ने शेषेन्द्र को विश्व कविगण और बुद्धिजीवियों के परिवार का सदस्य बनाया है।

संपर्क : सात्यकि S/o शेषेन्द्र शर्मा
saatyaki@gmail.com, +91 94410 70985, 77029 64402

प्रकाशकीय

कविता की कसौटी
कविसेना ने दी गद्य कविता को गरिमा और गौरव

मानव तत्त्व को कविता तत्त्व के रूप में तरासने वाले महाकवि ही नहीं, देश के इतिहास को उस देश के नागरिक की आत्मकथा के रूप में निरूपति करनेवाले दार्शनिक हैं शेषेन्द्र। एक दार्शनिक के रूप में ही वे ठहर कर नहीं रह गये। अगर उस रूप में ही ठहर जाते तो उनके सात्यिकार रूप को सुसंपन्न मूर्तिमता नहीं मिलती। आधुनिक कविकुल गुरु के रूप में उनका कर्तव्य संपूर्णत: सफल नहीं हो पाता। आप दोनों को समवेत रूप में निभाकर समुन्नत ख्याति प्राप्त कर सके हैं। विश्व साहित्यवेत्ता के रूप में उनको प्रतिष्ठित करनेवाली रचना ही कविसेना मेनिफेस्टो है।

कविसेना मेनिफेस्टो आधुनिक काव्यशास्त्र की समालोचना का दिशा निर्देश कर एक ल्यॉण्ड मार्क के रूप में अवतरित ग्रंथ है। वैज्ञानिक आन्दोलन के लिए सहायक सिद्धान्त ग्रंथ है। सुनिश्चित कविता समालोचना के लिए पारस पत्थर है। उन्होंने ही इसे आधुनिक काव्यशास्त्र कहा है। इस मेनिफेस्टो को आरंभ में उन्होंने 30 पृष्टों में अवतरित करने की दिशा में सोचा था। लिखते-लिखते उसने 350 पृष्टों का बनकर आधुनिक काव्य शास्त्र का रूप और सार धारण कर लिया। सांप्रदायिक नेत्रों से आधुनिकता को दर्शित करनेवाले द्रष्टा के रूप में हमारे सामने आज गुण्टूरि शेषेन्द्र शर्मा को दर्शानेवाला महत्वपूर्ण ग्रंथ है यह।

कविता करना (लिखना) चाहते हैं तो समस्त कविता सामग्री को सामने रखना ही चाहिए। बाहर से कविता अत्यंत शक्ति से युक्त शब्द-योजना है। अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, मेटफर आदि उसकी काव्य सामग्री है। इसी लिए कविता को आकर्षण शक्ति संप्राप्त है। यह शक्ति चुंबक में भी नहीं रहती। यही अपनी शक्ति के कारण जांतव दशा में रहनेवाले मनुष्य को सभ्य और संस्कारवान के रूप में रूपायित करती है। युग-युगों से मानव समाज में व्याप्त संस्कृति और सभ्यताओं को सृजित करनेवाले कवि ही हैं। कवि अगर नहीं होते तो मानव समाज और वन में अंतर ही नहीं रह जाता। इस प्रकार कवि को समाज में सर्वोत्तम स्थान मिल ही जाता है। इसी का निरूपण कविसेना मेनिफेस्टो में हुआ है।

इस ग्रंथ में शब्दशक्ति को तोल सकनेवाले आलंकारिक के रूप में दर्शन देनेवाले शेषेन्द्र का मानस एक कविता प्रयोगशाला है। उस समय तक आधुनिक कविता का स्पषृत: विवरण प्रस्तुत न कर सकनेवाली अस्पष्ट भावनाओं का एक स्पष्ट रूप इस ग्रंथ में निखर आया है। कविसेना मेनिफेस्टो अनुभव को निरवार कर पद्यों को तरासकर पद भावचित्रों से नवीन कविता के व्यक्तित्व को सारभूत रूप में प्रस्तुत करता है।

शेषेन्द्र ने नये विचारों को नये कपडे पहनवाये हैं। गद्य कविता को सिंहासनस्थ कराया है। उनके अनुभवों का सार ही कविसेना मेनिफेस्टो है। काव्यशास्त्रज्ञ शेषेन्द्र के द्वारा किये गये प्रयोगों का फल और आधुनिक गद्य कविता के लिए उनके द्वारा रूपाइत लक्षणों का समग्र रूप ही कविसेना मेनिफेस्टो (आधुनिक काव्य शास्त्र) है।

शेषेन्द्र ने एक डैनमैट शक्ति को कविता की रीड की हड्डी में नयी अभिव्यक्ति के रूप में चढ़ा दिया है। उसका फल ही कविसेना मेनिफेस्टो है। इस ग्रंथ के अवगाहन से लगता है कि शेषेन्द्र ने पाश्चात्य साहित्य अलंकार शास्त्र सिद्धान्त और भारतीय काव्यशास्त्र सिद्धान्त सब का समन्वित रूप इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। अभ्युदय साहित्य के अभाव में इस प्रकार के ग्रंथ का अवतरण असंभव ही था। पाश्चात्यों के प्रतीक बाद का प्रबल रूप और प्रभाव शेषेन्द्र पर अवश्य दिखाई देता है। यह इस ग्रंथ के द्वारा परिलक्षित भी होता है। अनुभूतिवाद के लिए यह शास्त्रीय नींव बनता है। कविसेना मेनिफेस्टो के अवतरण के बाद साहित्य क्षेत्र के लिए एक सच्चा मार्ग प्रशस्त हुआ है। कविसेना आन्दोलन के साथ साथ आलंकारिकता और काव्यात्मकता से युक्त कविता रचना की ओर युवा पीढी उद्यत हुई है। कवि सम्मेलनों में अशेष जन बाहुल्य ने भाग लेना आरंभ किया। यह साहित्यक नव्यांदोलन आज तक चलता आ रहा है। आज का कवि इसी प्रकार की कविता लिखने के अलावा और किसी प्रकार की कविता करता है क्या? इसी करण आधुनिक गद्य कविता को काव्य का गौरव संप्राप्त होना ही नहीं बल्कि कविता को अत्युत्तम रूप प्रदान करने की दिशा में कदम बढ़े हैं।

– डॉ. अद्दंकी श्रीनिवास
हैदराबाद केंद्र विश्वविद्यालय

वास्तव में कविता लिखनी चाहिए

व्यथित हो या न हो – चाहे कुछ भी हो – मुझे तो कहना ही पडेगा। आज के कवियों, विशिष्ट अलंकरण और पुरस्कार प्राप्त लोगों सहित के द्वारा लिखी जानेवाली कविता और दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले रपोर्ताज के बीच कोई अंतर नई दिखाई दे रहा है। दोनों जनता की समस्याएँ ही प्रतिबिम्बित कर रही हैं। दोनों ही अकृतिम भाषा में लिखी जा रही हैं। दोनों को आम जनता में आदर समान रूप से मिल रहा है। इसी कारण से दोनों को जनवादी अथवा अभ्युदय कविता कही जा सकती हैं। लेकिन यह दु:स्थिति है कि मेरी दृष्टि में दोनों में कोई अंतर दिखाई नहीं दे रहा है। जिन्हों यह अंतर दिखता हैं वे भाग्यवान हैं। आजकल सामान्यत: भाग्य साहित्य के लिए पर्यायवाची शब्द बन चुका है।

क्या हम जो कुछ भी लिखते हैं वह सभी कविता बन सकती है? या फिर इस ओर ध्यान दिये बिना, सोचे बिना हम जो लिखेंगे वही कविता है। ऐसा सोचकर दृढ़ विश्वास के साथ कविता लिखनेवाले आजकल बड़ी तादाद में उभर कर सामने आ रहा है। इस तरह के भीषण साहित्य को देखकर साहित्य समरांगण सार्वभौम गोपाल चक्रवर्ति कहते हैं कि आन्ध्र साहित्य को पौराणिक युग, प्रबन्ध युग, दक्षिणान्ध्र युग आदि काल खण्डों में विभाजित करने के स्थान पर यदि पीने के पानी के गिलास ढ़कने के लिए काम आनेवाले ग्रंथ, खिड़कियों को हवा से बंध होने से रोक सकनेवाले ग्रंथ, तकियों के रूप में रखने में काम आनेवाले ग्रंथ आदि के रूप में वर्गीकृत करें तो उचित होगा। विशेष रूप से इस हेतुवादी युग में इस तेलुगु प्रांत के साहित्य की ग्रीष्म ऋतु में शास्त्री जीवन प्रदायिणी हैं। इसी लिए शेषेन्द्र वहाँ होते हैं।

वास्तव में ''मनुष्य के लिए शर्म ही एक आभूषण है'' वाला सभ्य सिद्धान्त का नाश ही हो गया है। जो कुछ भी लिखा गया है वह ठीक है या नहीं, कोई सुनेंगे तो क्या समझेंगे, हमारे मुँह पर ऐसा बिना सोचे-सभाओं में, रेडियों कार्यक्रमों में पढ़ रहे हैं, पत्र-पत्रिकाओं में छपवा भी रहे हैं।

ऐसी स्थिति में श्रोताओं के बारे में हमें कुछ कहना ही नहीं है। वे सब बड़े ही भलेमानुष हैं। महापुरुष हैं। 'अच्छी कविता क्या है?' इसे समझने वे अपना समय व्यर्थ करना नहीं चाहते। वे साहित्य में करनेवाले नेता, रुचि का दिखावा तो मन बहलाने के लिए कार्यक्रमों में आनेवाले विनोदप्रिय जनता हैं वे। आमतौर पर ऐसे लोग कवि-सम्मेलनों में दिखाई देते हैं। सही और अच्वी कविता को वे पहचान नहीं सकते। क्योंकि कविता व्यर्थ में उभर कर आनेवाली वस्तु नहीं है। वह एकाग्र दीक्षा से और उपासना से सिद्ध होनेवाली विद्या है। ऐसे लोग आजकल में त्रुटियों के दिखाई देते हैं। इन की उपस्थिति पर किसी प्रकार का उत्पत्ती नहीं लगाया जा सकता। उनके न रहने पर भी न लाभ है न कोई हानी। वे कहीं भी हो एक बाजारू मार्क का वाक्य सुनाई पड़े तो तुरन्त तालियाँ बजाते हैं। एक कुकवि अथवा अकवि अगर एक चुटुकला सुना देता है तो ये लोग हर्ष ध्वनियाँ बिखेरते हैं। क्या इस के लिए कविता की जरूरत है? इसके लिए इंद्रजाल, मंत्रजाल या हास्य व्यंग्य काफी है न। कविता के नाम पर क्यों? लेकिन ये ही कवि सम्मेलनों में दिखाई देनेवाले दृश्य हैं। अच्छी कविता पढ़ेंगे तो ये निर्विकार बैठ जायेंगे मानो उनका सब कुछ पानी पानी हो बह गया हो। तब वहाँ पर कविता पाठ करनेवाला एक मिनट पढ़ता है अथवा दो मिनट। बस तीसरे मिनट पर निराश हो बैठ जाता है।

वास्तव में ये लोग किस प्रकार के हैं? हीरों से जडी एक सुंदर अंगूठी को आफ्रिका के घने जंगलों में गिरा - वहाँ के लोग उसे देखकर कम से कम छुएँगे भी नहीं, उसे रौंधते हुए गुजर जाएँगे। यह नहीं सोचते कि यह क्या है और यहाँ क्यों पड़ा हुआ है तथा कहाँ से आया है। क्योंकि उनकी जीवन शैली में उस अंगूठी के लिए कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं है। इसी लिए उन्हें अंगूठी किसी भी प्रकार से आकर्षित नहीं करती। उनके लिए अंगूठी और आलू में कोई अंतर नहीं है। अंगूठी से आलू अधिक लाभदायक हैं। आजकल की कविता भी आजकल आफ्रिका के जंगलों में गिराई गई अंगूठी के समानही है। आज के संदर्भ में कविता के परिभाषा को चिल्लाकर समझाने का समय आ गया है। इसके लिए एक आंदोलन की जरूरत है। अन्यथा कविता बे-सहारा की हो जाएगी।

भूख की कविता लिखो या अचार की, छन्दोबद्ध रूप में लिखो या गद्य

लक्ष्य और नियम

वैज्ञानिकों ने मनुष्य को सोचनेवाला पशु कहकर परिभाषित किया है। कविसेना कहती है कि मनुष्य आँसू बहानेवाला पशु है।

बेंज़ामिन फ्रांकलिन ने मनुष्य को औज़ार बनानेवाला पशु कहा है, किन्तु कविसेना कहती है कि वह शस्त्र बनानेवाला जंतु है।

आकाश में कौंधनेवाली बिजली को बेंज़ामिन फ्रांकलिन ज़मीन पर ले आये हैं तो कविसेना कहती है कि नरक में कौंधनेवाले अश्रुओं को हम नक्षत्र लोक में पहुँचाएँगे–

बह–बह कर आज आँसू भी क्रांन्तिकारी बन कर कह रहे हैं कि अब हम नहीं बहेंगे। कितने दिन और यह गाथा–भार को वहन करता फिरूँ– पूछ रहा है भूगोल।

सुनिए –

औज़ार बनानेवाले मनुष्य को आयुध बनानेवाले मनुष्य के रूप में बदलना है – अर्थात् जीवन के हाथों हारनेवाला न बन कर जीवन से बलवान बनना है मानव को।

मात्र मानसिक युग को स्वस्ति देकर मनुष्य को क्रियाशील युग का स्वगात करना है।

दराती किसान का शस्त्र है। हथौड़ी मजदूर का अस्त्र है। तलवार सैनिक का अस्त्र है। नारे राजनीतिक नेता के अस्त्र हैं–इसी तरह कविता ही कवि का अस्त्र होती है। प्रजा समूह के लिए कवि अपने अस्त्र का प्रयोग करता है। प्रजा की कहानी कहने के लिए कवि की मसि (स्याही) प्रवाहित होती है।

कवि ही देश का असली नेता है। राजनीतिक नेता नहीं। राजनीतिक नेता के नेतृत्व को तिरस्कृत करती है कविसेना। राजनीतिक नेताओं के भवनों में कुत्तों के समान जीनेवाले कवि–नेताओं को गर्हित करती है।

कवि को अपने अस्त्र की शक्ति जाननी है। अपने अस्त्र की प्रयोग–विधि जाननी है। उसका प्रयोग कब, क्यों और कहाँ, कैसे करना चाहिए– यह भी जानना है।

कवितास्त्रं की प्रयोग-कला के रहस्यों को समझने के लिए कविता चेतना अपने ऊपर आवाहन करने के लिए और आधुनिक युग में उत्पन्न हुए श्रमिक-जगत् के महोत्सव में प्रथम ध्वजा फहराने के लिए दिग्दिगन्तों में कविसेना को व्याप्त होना है।

कविसेना अपने लक्ष्यों, नियमों को संक्षेप में इस प्रकार परिभाषित करती है-

1. यह कवियों की पार्टी है। (अ) कवि-कविता शिल्प, (आ) कवि-समाज के बीच के संबंध-इन दोनों पर यह आन्दोलन रूपायित है।

2. कविता के लिए एक मानदण्ड निच्छित होना चाहिए। यह मानदण्ड संसार के कवित्व-तत्ववेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के अनुशीलन के बाद किसी एक सार्वभौम सूत्र के रूप में स्वीकृत होना है। उसके साथ-साथ सब देशों में, सब कालों में अग्रणी कवियों की कृतियों को जोड़कर वर्तमान कविता का मूल्यांकन करना है। जो कविता नहीं है उसे निर्दयी हो बहिष्कृत करना है। कविता के लिए किसी प्रकार के मानदण्ड को न माननेवाली अशास्त्रीय दृष्टि का खण्डन करना है।

3. आर्थिक और सामाजिक समस्याओं तक इस शताब्दी के द्वारा स्वीकृत मार्कस्वादी सिद्धान्त को न्यूनतम समाधान के रूप में स्वीकर करना है।

4. समग्र मानव जीवन में राजनीति एक अंश मात्र ही है। राजनैतिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए यह एक साधन है। लेकिन कवि संपूर्ण मानव जीवन से संबंध रखता है। इसीलिए कवि का कर्तव्य राजनीति तक ही सीमित नहीं रह सकता। समसामयिक संदर्भ के अनुसार कवि की दृष्टि में राजनीति के लिए कुछ अधिक प्रधानता दी जा सकती है, किंतु वह संपूर्ण मानव जीवन के साथ अपने कर्तव्य को विस्मृत कर एक सीमित प्रयोजन के साथ प्रतिबद्ध नहीं हो सकता। कवि सीधे मानव जाति के लिए ज़िम्मेदार है, एक राजनीतिक पार्टी के लिए नहीं।

5. उपर्युक्त कारणों से, कवि समस्त मानव जाति के प्रति ज़िम्मेदार होने के कारण उसके कर्तव्य राजनैतिक कर्तव्यों से गुरुतर हो जाते हैं। इसीलिए मानव

आज की साहित्य समालोचना की असली समस्या : उसके वाक्य में चुम्बक शक्ति

भाइयो ! आज साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक चेतना कोई समस्या नहीं है, सामाजिक चेतना को साहित्यिक चेतना में परिवर्तित करने की क्षमता कवि में चाहिए। यही असली समस्या है, वर्तमान साहित्य-क्षेत्र में।

साहित्य-चेतना ही कवि की असली कसौटी है। महाकवि चार्ल्स बोदिलेर का कथन है -

"It is not given to every one to take a bath in the multitude; to enjoy the crowd is an art."

राजकीयवादी इससे ज्यादा जनता को अनुभव करता है। लेकिन बोदिलेर उनके संबंध में नहीं कह रहे हैं। साहित्यिक चेतना जिनको चाहिए उन्हीं के संबंध में वे कह रहे हैं। क्योंकि जन के बीच जल विहार करने की बात एक रसतत्वानुभूति है। इसी के संबंध में वे कहते हैं-

"The perfume of another world with which I inebriated myself by means of a perfected Sesnibility." (The double room).

इस तरह 'जन में जल विहार' की रसानुभूति अपने "Perfected sensibility" के द्वारा अनुभव करनेवाली अनुभूति है। इसीलिए 'जन में जल विहार' कर सकनेवाला कवि अन्धकार में भी स्नान कर पवित्र हो सकता है। बोदिलेर कहते हैं-

"At last then I was allowed to refresh myself in a bath of darkness." (At one O'Clock in the morning).

"Prefected Sensibility" का मतलब है कि कवि का पहले व्यथित होना, बाद में उस व्यथित होने को जीवन में बुद्धिपूर्वक निमंत्रित करना, उस व्यथा को एक कला के रूप में अभ्यास करना है। इस बृहत् चैतन्याविर्भाव में सामाजिक चेतना और राजनैतिक चेतना अल्प अंश हैं। ये सब चैतन्य की विराटता के अंग हैं। इस प्रक्रिया को 'अनुभूति कला' नामक अभिधान दे सकते

हैं। इस अनुभूति-कलाभ्यास से ही जन्म लेनेवाली है कविता। वही साहित्य चेतना है, वही 'Perfected Sensibility' है। 'कविता जीवन में से जन्म लेती है' कहने का तात्पर्य भी यही है और कुछ नहीं। अन्यों की व्यथाओं को और सब व्यथाओं को अनुभव करनेवाली इस कला को महाकवि बोदिलेर चामत्कारिक ढंग से 'आत्मा द्वारा किया जानेवाला पवित्र व्यभिचार' कहते हैं-

"This holy prositution of the Soul" (Crowds)

रूसी कविता के लेनिन के रूप में अभिवर्णित महाकवि मायाकोवस्की इसी बात को एक स्थान पर किन शब्दों में कह रहे हैं देखिए -

"In order to understand the social demand properly, the poet must be at the centre of affairs and events." (How are verses to be made.)

वे ही उसी निबन्ध में एक और जगह पर अपनी आत्मिक दशा के संबंध में काव्य पंक्तियों को मन में संरचित करते हुए और खयालों में जुगाली लेते हुए कहते हैं -

"..... I am always muttering something to myself. It is this concentration that accounts for the celebrated absent-mindedness of the poert."

इसी सत्य को और शक्तिशाली ढंग से एक स्थान पर उन्होंने इस प्रकार प्रतिपादित किया है -

"Replace the slow march of time with a change of place, fill an actual day with a century of fantasy".

सत्यान्वेषण के विचार रखनेवालों और तत्त्व की कामना करनेवालों द्वारा ध्यान दिए जानेवाले विचारों के कुछ टुकड़े हैं-

"The celebrated absent-mindedness of the poet." और उसके बाद "fill an actual day with a century of fantasy". बस।

महान् साहित्य का सत्य है - हम जिसे वस्तु कहकर पुकारते हैं उसकी साहित्य चेतना के रूप में परिवर्तित होनेवाली प्रक्रिया ही साहित्य में शीर्षस्थ प्रक्रिया है। यही शक्ति हासिल करनी चाहिए। संसार में वस्तु की कोई कमी नहीं है। 'न काव्यार्थ विरामोस्ति यदिस्यात् प्रतिभागुण:' कहकर ध्वन्यालोक भी इसी सत्य का उद्घाटन करता है। इस शक्ति को साधकर वज्रायुध के समान प्रयोग करनेवाले वाक्य में चुम्बक शक्ति रहती है। वह वाक्य लोहे के दिलों

End of Preview.

Rest of the book can be read @

http://kinige.com/book/Kavisena+Manifesto+Hindi

* * *